नववर्ष 2011 के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण का पावन संदेश

अर्हम्

वर्ष 2010 की समाप्ति और 2011 के प्रारंभ का समय। जनमानस में उल्लास का माहौल। यह समय विगत वर्ष के सिंहावलोकन और नये वर्ष के योजना निर्माण का है।

नये वर्ष का प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण सुफल बने, यह वांछनीय है। उसके लिए विकास की सम्यक् अवधारणा पर ध्यान देना आवश्यक है।

मनुष्य भौतिक विकास चाहता है। उसे नकारा भी नहीं जा सकता। भौतिक विकास के लिए आर्थिक विकास भी आवश्यक होता है। यह एकांगी विकास है। विकास का दूसरा पहलू है – आध्यात्मिक विकास और नैतिक विकास। इस प्रकार सामान्य आदमी के लिए विकास का चतुष्कोण बन जाता है –

1. भौतिक विकास
2. आर्थिक विकास
3. नैतिक विकास
4. आध्यात्मिक विकास

केवल प्रथम दो विकास ही नहीं, अपर दो विकास भी विकसित हों तो व्यक्ति, समाज, देश और विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ ने जनता में अहिंसक और नैतिक चेतना जागृत करने का बहुत प्रयास किया। वह कार्य आज भी प्रासंगिक है। हम भी इस दिशा में प्रयत्नशील हैं।

नए वर्ष में यदि नैतिक और आध्यात्मिक विकास के प्रति भी सबका ध्यान आकर्षित हो तो नया वर्ष मील का एक महत्त्वपूर्ण पत्थर सिद्ध हो सकेगा।

शुभं भूयात्!

आचार्य महाश्रमण